पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/09510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 28, अंक 264 अक्टूबर 2025

धम्मचक्र प्रवर्तन दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 28 अंक 264
अक्टूबर 2025

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/09510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ.बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	03
2	प्रेमचन्द के उपन्यासों में प्रतिबिम्बित गांधी दर्शन	डॉ. नूरजहाँ रहमातुल्लाह	04
3	शैक्षिक अव्यवस्थाओं का प्रतीक “ट-टा प्रोफेसर” उपन्यास	ज्योत्सना राठौड़ एवं डॉ. रीना स्वामी	06
4	“हाशिए का समाज और रत्नकुमार सांभरिया का साहित्य”	कु. मोनिका देवी, शोधार्थी डॉ. सुनील कुमार	09
5	जलवायु लक्ष्य, विजन 2030, चुनौतियाँ, समाधान और आगे की राह	पवन कुमार	12
6	Martyrdom at Sea : Historical Refletions on the INS Sindhuratna Incident and Lt. Commander Kapish Singh Muwal's Sacrifice	Dr. Amardeep	16
7	Understanding Dr. Baba Saheb Ambedkar's Contribution to Journalism, Through a Study of His Newpapers	Dr. Jayant Wankhade	21
8	एक तरफ कुप्रथा और दूसरी तरफ उद्धारक बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर	बिकलेस कुमार गुप्ता	25

UGC Care Listed Journal

खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

अपनी बात

किसी भी समाज व्यवस्था के नियमों का आधार नीतिपूर्ण हो तभी वह स्थायी हो सकता है। नीतिपूर्वक रहने का आधार लेकर समाज धर्म को धारण करें, तभी वह उपयोगी होता है। ऐसा धर्म कभी भी शास्त्रीय ज्ञान से दाये–बांए नहीं हो सकता। धर्म और शास्त्र में अंतर होते ही कभी भी धर्म का नाश हो सकता है। स्पष्ट है कि विवेक के विरुद्ध होकर धर्म कभी भी कार्यक्षमता नहीं रख सकता।

बौद्ध धम्म का प्रारंभ ठोस आधार पर हुआ है, मानव कल्याण के लिये इससे उपयुक्त कोई दूसरा धर्म नहीं है। बौद्ध धर्म विश्वास के स्थान पर तर्क और वैज्ञानिकता को स्वीकार करता है। बौद्ध धर्म–दर्शन में स्थायी या नित्य जैसी कोई चीज, वस्तु या सत्ता नहीं है। बौद्ध धर्म में ब्रह्म, ईश्वर, आत्मा, परमात्मा आदि के अस्तित्व के लिये कोई स्थान नहीं है। इसी प्रकार बौद्ध धर्म परलोक–स्वर्ग–नरक की बात नहीं करता और न ही वह नियति या भाग्य को मानता है। न अवतार और देवी–देवताओं को।

बौद्ध चिंतन भी दुःख, दुःख का कारण, दुःख निरोध (दुःख से मुक्ति) और दुःख विरोध प्रतिपदा (दुःख से मुक्ति का मार्ग) इन चार आर्य सत्य पर केन्द्रित है।

मानव के लिये भौतिक सुख ही सब कुछ नहीं है, उसे संस्कृति की भी जरूरत है, क्योंकि शरीर पांच कर्मेन्द्रियों व ज्ञानेन्द्रियों के साथ उसे 'मन' भी मिला है। इसलिये शरीर का जैसे पालन–पोषण करना होता है ठीक वैसे ही मन भी सुसंस्कृत (चरित्रवान) होना चाहिए यही बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर की जीवन साधना थी। उनके राजगृह की लाइब्रेरी में रखे एक बोर्ड पर लिखा था–''शब्द में विद्वता, विचारों में निष्ठा और बर्ताव में चरित्र।'' ऐसी थी डॉ. अम्बेडकर की महान भारत की कल्पना।

सन् 1950 की बुद्ध जयंति के शुभावसर पर दिल्ली में अपने भाषण में बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि– ''राष्ट्रीय पताका के लिए 'राज चिन्ह' और 'राजमुद्रा' निश्चित करने का प्रश्न उपस्थित होने पर ब्राह्मण संस्कृति से हमें कोई भी ऐसी वस्तु प्राप्त नहीं हो सकी जिसे कि स्वीकार किया जा सके। बौद्ध संस्कृति ने ही इस समस्या से हमें उबारा और हमने 'धम्म चक्र' को राजचिन्ह के रूप में स्वीकार किया। मानव प्रगति के लिए भेदभाव रहित प्रगतिशील और परिवर्तनशील धर्म की आवश्यकता है। मेरा विश्वास है कि धर्म के बिना समाज का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा।''

बौद्ध धर्म भारतीय है। इस देश में 2500 वर्ष के पूर्व भी बौद्ध धर्म था। तथागत बुद्ध के सारे तत्व अजरामर है फिर भी उन्होंने अपने सिद्धांतों को अपरिवर्तनीय होने का दावा नहीं किया। इस धर्म में समयानुसार बदलने की शक्ति है। इतनी उदारत किसी अन्य धर्म में नहीं है।

बुद्ध के धम्म चक्र को सबसे पहले जिन्होंने चलाया था वे हैं–कौडिल्य, भधीय, वष्प, महानाम और अस्सजित जिन्हें पंचवर्गीय भिक्षुओं के नाम से जाना जाता है। बुद्ध के समकालीन महापुरुषों में प्रमुख हैं–सारिपुत्र, मोगल्लायन, महाकाश्यप, उपाली और आनंद। इनके पश्चात् बुद्ध के उपदेशों को समझाने में जिन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की उनमें पाली भाषा के ग्रंथकार नागसेन, बुद्धदत्त, बुद्धघोष और धम्मपाल प्रमुख रूप से शामिल है।

बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर ने 1935 में हिन्दू धर्म त्यागने की घोषणा की और दुनिया के सभी धर्मों का गहन अध्ययन किया। अंततः महाकारुणिक तथागत के बौद्ध धम्म पर उनका मन स्थिर हुआ। अपना निर्णय सभी बौद्ध विद्वानों के सामने प्रकट करने के लिये 1951 में श्रीलंका के कोलंबों विश्व बौद्ध परिषद् में तथा 1954 में बर्मा के रंगून में हुई छठी बुद्ध जयंति में उपस्थित हुए। तदुपरांत 1956 ई. सन् को विजयादशमी 14 अक्टूबर को भिक्षु महास्थविर चंद्रमणी द्वारा उन्होंने नागपुर की दीक्षा भूमि पर पांच लाख अनुयाईयों के साथ बौद्ध धम्म की दीक्षा ग्रहण की।

बौद्ध धम्म के रत्नालय–बुद्ध धम्म संघ ने विश्व की संस्कृति एवं सभ्यता के सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। भारत की विदेश नीति भी बुद्ध के पंचशील के सिद्धांतों पर आधारित है। इसलिये हम कहते हैं–हमें ''बुद्ध चाहिए, युद्ध नहीं।''

अत्त दीपो भव।

– डॉ. तारा परमार

प्रेमचन्द के उपन्यासों में प्रतिबिम्बित गांधी दर्शन

– डॉ. नूरजहाँ रहमातुल्लाह
हिंदी विभाग

कोई भी कार्य मुश्किल तब होता है जब किसी की विचारधारा एवं व्यक्तित्व का साहित्य पर परोक्ष और अपरोक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है और उसे निश्चित रूप में संकेतित करना पड़ता है। भारत में गौतम बुद्ध के बाद गाँधीजी ही ऐसे व्यक्तिवाद व्यक्ति थे यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी। महात्मा गांधी का मानना था कि गाँधीवाद, कोई वस्तु या सम्प्रदाय नहीं है। गाँधीजी एक ऐसे व्यक्ति थे जिनकी विचारधारा, संवेदना, और चिन्तन पक्ष का मूल सिद्धान्तों पर चले। उन्होंने सिर्फ शाश्वत सत्यों को अपने नित्य जीवन से और प्रतिदिन के प्रश्नों पर अपने ढंग से उतारने का प्रयास मात्र किया हो। गाँधीजी के पूरे जीवन में ही गाँधीजी के समग्र दर्शन से भारतीय जनजीवन, साहित्य और दर्शन प्रभावित हुआ था। गाँधी दर्शन में सत्य, अहिंसा, प्रेम, सत्याग्रह, साध्य और साधन की पवित्रता, आदर्श समाज, विश्व बंधुत्व की भावना आदि है।

हिन्दी साहित्य में गाँधीवाद का प्रभाव आधुनिक साहित्यकारों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से देखा जाता है। उनमें से जैनेन्द्र कुमार, मैथिलीचरण गुप्त, प्रेमचंद, भगवती प्रसाद वाजपेई, सुमित्रानंदन पंत, अमृतलाल नागर, इत्यादि है। इन सभी साहित्यकारों में से प्रेमचंद की रचनाओं में गाँधीवादी दर्शन अंकुरित होते हैं। प्रेमचन्द कहते हैं – "मैं कम्युनिष्ट हूँ। किन्तु मेरा कम्युनिष्ट केवल यही है कि हमारे देश में जमींदार, सेठ आदि जो कृषकों के शोषक है, न रहे। मैं महात्मा जी के चेंज ऑफ हार्ट के सिद्धान्त में विश्वास करता हूँ। इसीलिए जमीदारी मिटेगी, यह मानता हूँ। जमीन किसान की होगी। मैं, गाँधीवादी नहीं हूँ। केवल गाँधीजी के चेंज ऑफ हार्ट में विश्वास करता हूँ।"[1] प्रेमचन्द की गोदान पूर्व प्रमुख कृतियाँ गाँधीवाद से प्रभावित है। प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि, आदि उपन्यासों पर गाँधीवाद की स्पष्ट छाप दिखायी देती है। 'निर्मला' और 'राबन' में भी गाँधीवादी सिद्धान्त देखने को मिलता है।

प्रेमचन्द के उपन्यासों पर जो राष्ट्रीय वातावरण परिलक्षित होता है, उसका मूल कारण तत्कालीन राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ कही जा सकती है। प्रेमचन्द के साहित्य में मानव प्रकृति के शाश्वत तत्व मिलते हैं। साथ ही उन्होंने अपने युग के ज्वलंत मुद्दों के प्रति भी गंभीरता प्रदान की। प्रेमचन्द के लिए स्वाधीनता आन्दोलन का अर्थ केवल विदेशियों से मुक्ति दिलाना ही नहीं था बल्कि उन अनेक व्यवस्थाओं से मुक्ति दिलाना था, जिन्होंने देश, समाज और धर्म को जर्जर कर रखा था, वे अंग्रेजो की गुलामी के साथ–साथ स्त्रियों पर पुरुषों की गुलामी, अछूतों पर सवर्णों की गुलामी, कृषकों पर जमीदारी की गुलामी, मजदूरों पर मील मालिक की गुलामी को भी मिटा देना चाहते थे। प्रेमचन्द स्त्री की आर्थिक सुरक्षा, स्त्री शिक्षा के पक्षधर थे। बिहार के चंपारण में हजारों भूमिहीन मजदूर और गरीब किसान अंग्रेजों के शोषण खाद्यान्न न कर नील और अन्य फसलों की खेती कर रहे थे। गाँधी जी ने किसानों पर होने वाले इस अत्याचार के विरोध में 1917 में चंपारण में पहला सफल सत्याग्रह किया। ऐसे समय में प्रेमचन्द ने किसानी चेतना के लिए कृषक समस्याओं पर 1922 में 'प्रेमाश्रम' उपन्यास में उल्लेख किया। प्रेमाश्रम में वे कहते हैं –

"सबै भूमि गोपाल की ही स्वीकार करता है तथा किसान और सरकार के बीच किसी अन्य वर्ग का श्रेणी की सत्ता एक अधिकार को वर्तमान समाज का कलंक समझता है।"[2]

रंगभूमि उपन्यास में गाँधीवादी नायक सूरदार के द्वारा चरमोत्कर्ष का युग दिखाया। सूर का साधन–शुद्धि का आग्रह, से चली आयी सामन्तवादी संस्कृति के प्रति आकर्षण आदि विचार पर गाँधीवाद का प्रभाव है।

सूरदार एक गाँधीवादी चरित्र है। रंगभूमि में सूरदास कहते हैं—"तुम लोग यह ऊधम मचाकर मुझे क्यों कलंक लगा रहे हो।...लहु बहाने से मेरी चिन्ता शांत न होगी।... परमात्मा मेरा दुःख मिटाएँ। भगवान से विनती कीजिए, मेरा संकट हरे। जिन्होंने मुझ पर जुलुम किया है, उनके दिल में दया, धरम जागे, बस मैं आप लोगों से और कुछ नहीं कहता।"[3]

गाँधी दर्शन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली अभिव्यक्ति रंगभूमि उपन्यास में हुई है। 'कायाकल्प' उपन्यास में गाँधीवादी के आध्यात्मिक एवं नैतिक पक्ष का प्रतिपादन हुआ है। 'गबन' उपन्यास में भी विलासप्रियता और शारीरिक सुख के पीछे पढने के भीष पर्यवास की ओर संकेत कर सेवा और त्यागमय जीवन की महिमा गायी गयी है। 'निर्मला' में दहेज और अनमेल की गंभीर समस्याओं का चित्रण किया है। प्रेमचन्द ने 'प्रतिज्ञा' उपन्यास भारतीय समाज की सबसे पीड़ित विधवा नारी की समस्या को लेकर लिखा जिसमें वे इस सामाजिक समस्या को सुधारवादी देश से सुलझाने की कोशिश करते हैं। 1918 में 'सेवासदन' इस उपन्यास में पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की पराधीनता की समस्या को विषय बनाया। प्रेमचन्द और गाँधीजी की धारणा समान है स्त्रियों की समस्या को लेकर। 'कर्मभूमि' उपन्यास गाँधीजी के स्वाधीनता और अछूतोद्धार आन्दोलन की कर्मभूमि का ही साहित्यिक रूप था । इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने क्रान्ति का व्यापक चित्रण करते हुए तत्कालीन सभी राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं को कथानक में जोड़ा है। 'गोदान' तक आते—आते सत्य की अंतिम विजय में प्रेमचन्द की आस्था डगमगाने लगती है। गाँधी जी और प्रेमचन्द दोनों महानायक ने अपने—अपने जीवन संघर्ष के नायक बनें, एक ने भारत को स्वाधीनता दिलाना तो दूसरे ने भारत के ग्रामीण लोग जो शताब्दियों तक शोषण और उत्पीडन से लड़ रहे थे उसको न्याय दिलाने का कार्य कर रहे थे। 'गोदान' का होरी के रूप में दिखाता है। जो अपने कर्तव्य को समर्पित निष्ठावान है, सहता है, मरता है पर हार नहीं मानता। भारत के किसान को लेकर, जो 'गोदान' में एक किसान की किसान से मजदूर बनने की कहानी कहती है। प्रेमचन्द ऐसे भारत के स्वप्रद्रष्टा नहीं थे, उनकी ऐसी चिंता की परिणति 'गोदान' में अपने तमाम प्रश्नों के साथ हुई। प्रेमचन्द ने आजादी पाने जा रहे भारत को सारी सामाजिक और राजनीतिक लड़ाई से मुक्त होने का एक सपना देखा। 'हंस' पत्रिका में अपने प्रथम सम्पादकीय में वे लिखते हैं—"हंस के लिये यह परम सौभाग्य की बात है कि उसका जन्म ऐसे शुभ अवसर पर हुआ है, जब भारत में नये युग का आगमन हो रहा है। जब भारत पराधीनता की बेडियों से निकलने के लिए तड़पने लगा है। .... हमारा यह धर्म है कि उस दिन को जल्द से जल्द लाने के लिए तपस्या करते रहें।... हंस का ध्येय आजादी की जंग में योग देना है।''[4]

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं प्रेमचन्द एक ऐसे लेखक थे जिन्होंने गाँधी दर्शन को जिया और अभिव्यक्ति दी। गाँधी के अनुसार सच्चा साहित्य समाजलक्षी होता है। बीसवी सदी में दो पुरुषों ने भारत की सोई हुई आस्था को जगाने का काम किया एक ने राजनीति के क्षेत्र में तो, दूसरे ने सामाजिक क्षेत्र में। भारतवर्ष के सामाजिक—राजनीतिक क्रांति में दो महान पुरुषों की समानता है। प्रेमचन्द मार्क्सवाद और गाँधी जी से प्रभावित होकर साहित्य को अमरत्व प्रदान किया।

आधुनिक युग में गाँधीवादी विचारधारा को नहीं अपनाया जाता किन्तु साहित्य सृजन में गाँधीवादी विचार की आवश्यकता है। गाँधीवाद आज ज्यादा से ज्यादा प्रासंगिक होता जा रहा है।

— **डॉ. नूरजहाँ रहमातुल्लाह** हिंदी विभाग,
कॉटन विश्वविद्यालय, पानबाजार,
गुवाहाटी, (असम)—781001
मोबा. 9435161974

संदर्भ :

1. प्रेमचन्द, प्रेमाश्रम (उपन्यास), पृ. 227
2. वही, पृ. 322
3. प्रेमचन्द, रंगभूमि, पृ. 196
4. प्रेमचन्द (सम्पादकीय), हंस पत्रिका, प्रेमचंद सम्पादक के रूप में पहला अंग।

शैक्षिक अव्यवस्थाओं का प्रतीक 'ट-टा प्रोफेसर' उपन्यास

– ज्योत्स्ना राठौड़ एवं डॉ. रीना स्वामी

मनोहर श्याम जोशी ने अपनी रचनाओं में समकालीन यथार्थ की विषम परिस्थितियों को उकेरा है। जोशी के इस 'ट–टा प्रोफेसर' उपन्यास में मानव–मन के विभिन्न पहलुओं का बहुत बारीकी से विश्लेषण किया गया है। वर्तमान परिस्थितियों में जोशी के पात्र मानसिक स्तर पर संघर्ष करते नजर आते हैं। इस उपन्यास में लेखक ने हास्य के सहारे विद्यालयों में शिक्षकों की नियुक्ति और उस पर होने वाली राजनीति को बड़े ही सहज तरीके से दिखाया है। सबको पदोन्नति की चाह हैं पर वे जिस पद पर हैं, उसके प्रति अपना कोई कर्तव्य नहीं समझते। जोशी ने काम और प्रेम जैसे संवेदनशील मुद्दों की त्रासदी को मजाकिया रूप में पाठक के सामने रखा है। इस उपन्यास को मुख्यतः प्रेम व काम भावना जैसे विषयों के आधार पर जाना जाता है। इन्हीं विषयों के बीच शिक्षण व्यवस्था पर भी व्यंग्य करते हुए, गंभीर मुद्दों की तरफ ध्यान आकर्षित करते हैं।

प्राथमिक शिक्षा को एक बच्चे की नींव माना जाता है। वह समाज की बुनियाद है लेकिन वर्तमान में विभिन्न प्रकार की अव्यवस्थाएँ उसमें फैली हैं। प्राथमिक शिक्षा की दयनीय स्थिति को सामने लाने का प्रयास किया गया है। वर्तमान समय में विद्यालयों में शिक्षक आपस में राजनीति करने में इतने उलझे हुए हैं कि उस विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य उनकी राजनीति में ही सिमटकर रह गया है। इस उपन्यास की शुरूआत अल्मोड़ा के सुनौलीधार गाँव से होती है, जहाँ पर लेखक को श्माट सैपश यानी मास्टर साहब कहा जाता है। लेखक ने सुनौलीधार के वातावरण को 'कॉमिक' वाले अर्थ में 'रोचक' कहा है। इस प्राइमरी से हाई स्कूल में हेडमास्टर स्वयं को प्रिंसिपल बुलवाना पसंद करते हैं। जो प्रिंसिपल हैं उन्हें लोग प्रोफेसर कहकर पुकारते हैं। "सबसे पहले मैं मिला स्कूल के नये हेडमास्टर शोभनसिंह से। उन्होंने हैडमास्टर सम्बोधन पर आपत्ति की और कहा–मुझे प्रिंसिपल कहा कीजिए। हैडमास्टर तो षष्टीबल्लभ पन्त हैं, जिन्हें लोग–बाग आम तौर पर प्रोफेसर पुकारते हैं।"[1]

सम्पूर्ण विद्यालय ही अव्यवस्थाओं का प्रतीक है। प्रिंसिपल व हेडमास्टर जैसे जिम्मेदार पदों पर बैठे लोग अपने अहं की संतुष्टि व पद लोलुपता में लिप्त रहते हैं। षष्टीवल्लभ पंत ने हिंदी व इतिहास दो विषयों से एम.ए. कर रखा है। इसलिए नाम के आगे प्रोफेसर लगाते हैं। भारत की शिक्षा प्रणाली में शिक्षा, ज्ञान सिर्फ डिग्रियों तक सीमित रह गया है। अब डिग्रियों के माध्यम से योग्यता देखी जाती है। प्रोफेसर ट–टा स्कूल अध्यापक से हेडमास्टर बन गये पर उनके पास कोई टीचर ट्रेनिंग की डिग्री नहीं थी। अपनी डबल एम.ए. को वे प्रोफेसर के बराबर मानते थे। ऐसे विद्यालयों में हम बच्चों के सर्वांगीण विकास की बात कैसे कर सकते हैं, जहाँ व्यवस्था संभालने वाले लोग ही अपने पद, योग्यता तय नहीं कर पा रहे हो। "किसी भी देश की प्रगति और विकास की गति और गुणवत्ता वहां के अध्यापकों की कार्य–कुशलता और प्रतिबद्धता तथा उनके द्वारा अपने जीवन में उतारे गए मूल्यों से निर्धारित होती है । गुरु, अध्यापक या आचार्य से एक अपेक्षा तो समाज तथा हर व्यक्ति को होती ही हैय उनका अपना आचरण अनुकरणीय हो, वे राष्ट्र की भावी पीढ़ी का निर्माण करते हैं, वे ही राष्ट्र निर्माण की संरचना को मजबूती देते हैं, वे ही राष्ट्र निर्माण का आधार स्तम्भ हैं।''[2]

प्रोफेसर को 'ट–टा" कहने के पीछे यह कहानी है कि वह लोगों से विदा लेते वक्त 'टा–टा' की जगह 'ट–टा' कहते थे, जो जनसाधारण में प्रचलित हो गया। "पता नहीं आपने किन अंग्रेजों से अंग्रेजी सीख रखी है

प्रोफेसर सैप। आप तो उच्चारण तक अंट–शंट करते हैं। 'मैजर' को 'मैयर' कहते हैं और वुड को 'उड'। और आप ये भी देख लीजिए कि अंग्रेजी बोलने में पंजाबियों वाली तमाम गलतियाँ करने के साथ–साथ आप कुमाऊँनियों वाली गलतियाँ भी करते हैं। आप 'वास्ट' को 'भास्ट' कहते हैं और टाटा को ट–टा। बेकार की बहसबाजी करने से तो कोई फायदा है नहीं, मैं तो इतना ही जानता हूँ कि आप सिर्फ बी. ए. हैं और मैं डबुल एम. ए.। दुनिया में इन मैनेजर सैप के बाहिक और कोई नहीं होगा, जो मामूली बी.ए. को डबुल एम. ए. से बड़ा समझेगा।"[3]

इसी प्रकार की शिक्षण संस्थान में उच्चारण संबंधित समस्याओं को उजागर करते हुए अशोक पाण्डे ने 'लप्पुझन्ना' उपन्यास में दिखाया है कि कॉलेज में तिवारी सर है जिनको विषयों के नाम का उच्चारण तक सही से नहीं आता है। भूगोल को भीगोल, ऐसे ही दुर्गादत्त मास्टर मुरादाबाद को मुर्दाबाद बोलते हैं। नेस्ती मास्टर भी रजिस्टर को रईशटर कहते हैं। "कोयले की रंगत वाले थ्योरी मास्साब हमें चित्रकला यानी आल्ट के अलावा भूगोल यानी भिगोल भी पढ़ाते थे।"[4]

प्रोफेसर जो स्वयं को पढ़ा–लिखा सभ्य व्यक्ति दिखाने के लिए अंग्रेजी के गिने–चुने शब्दों का प्रयोग करते हैं। उनके कपड़े पहनने का ढंग भी अंग्रेजों की तरह ही है। लेखक ने इसके माध्यम से बताया है कि प्रोफेसर ट–टा ही नहीं वर्तमान में न जाने कितने शिक्षक हैं जो स्वयं को व्यवहार, ज्ञान, नैतिकता, कर्तव्यपालन के तराजू में न तौलकर बाह्य आवरणों के माध्यम से खुद को श्रेष्ठ साबित करना चाहते हैं। ष्प्रोफेसर ट–टा न केवल अंग्रेजों की पोशाक पहनते थे, बल्कि उन्हें अंग्रेजों की भाषा से भी बहुत प्रेम था। वह अपनी एक जेबी–नोटबुक में अंग्रेजी के ऐसे तमाम शब्द दर्ज कर लिया करते थे जो उन्होंने पहली बार सुने हों। इसलिए लोगबाग मजा लेने के वास्ते उन्हें उलटे–सीधे शब्द गढ़कर, बता देते थे। लिहाजा वह उस नये शब्द को तभी मान्यता देते जब अपनी डिक्शनरी में उसे पा जाते। अंग्रेजी भाषा ही नहीं, अंग्रेजी के तौर–तरीकों के भी वह कायल थे। इसलिए वह चाहते थे कि जूनियर लोग, जाहिर है कि सुनौलीधार स्कूल के प्रिंसिपल और प्रबन्धक को छोड़ बाकी सभी उनके जूनियर थे, उन्हें 'सर' कहकर पुकारें। स्वयं वह जूनियरों के नाम के आगे 'मिस्टर', जोड़ना कभी न भूलते। जहाँ तक हो सके वह स्थानिक लोगों की तरह एक–दूसरे का अभिवादन करते समय नमस्कार कहना टाल जाते थे और समयानुकूल अंग्रेजी अभिवादन का प्रयोग करते थे– गुड मॉर्निंग, गुड ईवनिंग वगैरह।"[5]

विद्यालय में शिक्षा और शिक्षार्थियों के लाभ के लिए कोई कार्य नहीं होते हैं अपितु बेवजह के मुद्दे बनाए जाते हैं ताकि समय व्यतीत किया जा सकें। लेखक के लिए यह विद्यालय पढ़ने–पढ़ाने की संस्था न रहकर एक ऐसी जगह बन गई है जहाँ हर रोज नये मुद्दे उठते हैं जिनमें लेखक स्वयं हास्य–व्यंग्य ढूँढता रहता है। सुनौलीधर के ग्रामीण भी इतने जागरूक नहीं है कि पठन–पाठन की समस्याओं पर गंभीरता से विचार कर सकें। लेखक जब घर आता है तब अपने मित्र ललित को सारे किस्से सुनाता है, "हकलाने वाले प्रिंसिपल की कहानी, अपने दानवीर जीजा के दान के पैसों से अपना कल्याण करने वाले मैनेजर की कहानी, अपने को सुनौलीधार का सुमित्रानंदन पंत समझने वाले छायावादी क्लर्क की कहानी, बर्मा मोर्चों की लड़ाई में अपनी काल्पनिक वीरता की स्मृत्तियों में खोए रहने वाले गंजेड़ी खीम सिंह की कहानी और कलावती येन नायक एक कूढ़मगज सुन्दरी की कहानी।''[6]

शिक्षा के लिये आने वाले बजट से प्रोफेसर ऑक्सफोर्ड की डिक्शनरी खरीद लेते हैं। लेकिन उसे वे अपनी निजी संपत्ति समझकर अलमारी के लॉकर में रखते हैं। बाकी बजट से महिला शिक्षिका को संगीत यंत्र दिलवा देते हैं। ऐसी स्थिति में हम सुनौलीधार जैसे छोटे से पहाड़ी गाँव के स्कूल में शिक्षा के स्वर्णिम भविष्य के सपने कैसे देख सकते हैं। जहाँ की ग्रामीण जनता के लिए ये डिक्शनरी ईश्वर की पुस्तक की तरह है। उनमें

इतनी भी जागरूकता नहीं हैं कि वे यह समझ सकें कि सरकार द्वारा विद्यार्थियों की सुविधाओं के लिए बजट पास किया जाता है। जिससे खरीदी हुई वस्तुओं पर प्रोफेसर ट–टा जैसे लोग अपना व्यक्तिगत हक समझने लगते हैं। "इसके जवाब में प्रोफेसर कांपते हुए स्वर में बोले मैंने लॉकर में इसलिए रखा मिस्टर सिंह की यह डिक्शनरी मैंने अपने पैसों से स्कूल के लिये खरीदी ठहरी जब तुम्हारे मामा मैनेजर सैप ने स्कूल के वास्ते डिक्शनरी खरीदने को पैसा देने से साफ इंकार कर दिया था अरे मिसेज नाथ के वास्ते तबला–हारमोनियम और सतार–तम्बूरा लेने से बचे होते पैसे तब ना डिक्शनरी खरीदने के लिए पैसे।"" कुछ ऐसा ही उदाहरण हमें ममता कालिया के 'अँधेरे का ताला' उपन्यास में देखने को मिलता है।

इस कॉलेज का क्लर्क जो स्वयं को छायावादी कवि कहता है लेकिन उसे छायावाद के बारे कुछ नहीं पता है। वह स्वयं को छायावादी कवि कहते हुए उसमें रीतिकालीन शब्दावली का प्रयोग करता है। 'जूनियर क्लर्क इसलिए मेरे लिए हास्यास्पद था उसने टी. एस. एलियट का नाम तक नहीं सुना था, 'तारसप्तक' के प्रकाशन की उसे कोई सूचना न थी, भावुक निम्न मध्यवर्गीय होते हुए भी वह मुझ जैसे इंटेलेक्चुएल की पंक्ति में बैठना चाहता था और हद हो गयी, प्रेम की छायावादी कविताएँ लिखता था और उनमें 'अलि' और 'बाला' जैसे शब्दों का प्रयोग करता था।"[8] इस उपन्यास की पात्र 'मिस येन' के प्रति उनका व्यवहार हो, बेटे के प्रति उनकी कुंठित मानसिकता हो या अंत में बेटे का आत्महत्या करना इन्हीं सब अवसादों के कारण ट–टा मौन धारण कर लेते हैं और बेटे की बरसी के दिन स्वयं भी अंतिम सांस ले लेते हैं।

ये सिर्फ एक प्रोफेसर, गांव या विद्यालय की कहानी नहीं है। बल्कि हमारी आधुनिक बुद्धिजीवी पीढ़ी के मूल्यों में आई गिरावट के साथ नैतिक व मानवीय पतन की कहानी है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जो शिक्षक अपने कर्त्तव्य से ज्यादा अधिकारों के प्रति लालायित रहते हैं उनसे स्वर्णिम भविष्य की उम्मीद कैसे की जा सकती है। मनुष्य शिक्षित तो होता जा रहा है लेकिन वह उसके साथ मानवीय मूल्यों का ह्रास करता जा रहा है । जिसमें शिक्षक भी शामिल हो गये हैं। हमारे देश में न जाने कितने सुनौलीधार जैसे विद्यालय हैं जिनमें आज भी शिक्षक उनकी पदोन्नति के प्रति लालसा के लिए राजनीति के बीच उलझकर रह जाते हैं। शिक्षक तो समय पर तनख्वाह पाते हैं, परन्तु विद्यार्थियों के लिए ऐसी शिक्षण व्यवस्था मजाक बनकर रह जाती है। जिसमें उनका भविष्य अंधेरें के गर्त में डूबता जा रहा है। जो विद्यालय शिक्षा के मंदिर कहे जाते थे वे आज हास्य–व्यंग्य के पात्र बनकर रह गए हैं। इस प्रकार यथार्थबोध, कल्पना और अनुभूति से युक्त सहज भाषा इस उपन्यास को विशिष्ट बनाती है। पाठक इसे पढ़कर सोचने पर मजबूर होते हैं कि क्या हमारी शिक्षा सही तरीके से मानवता का विकास कर रही है या केवल हम बौद्धिक रूप से ज्ञान प्राप्त कर अहंवादी होते जा रहे हैं ।

– **ज्योत्स्ना राठौड़,** शोधार्थी, हिन्दी विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़ हरियाणा, मोबा. 6377438204

– **डॉ. रीना स्वामी,** सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़, हरियाणा मोबा 7737810806

संदर्भ :

1. जोशी, मनोहर श्याम 'ट–टा प्रोफेसर' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्लीय संस्करणः 2019 पृ. 08
2. राजपूत, सिंह जगमोहनय भारतीय संस्कृति के आलोक में शिक्षा : अपेक्षाएं एवं संभावनाएं किताब घर प्रकाशन, नई दिल्लीय संस्करणः 2023य पृ. 90
3. जोशी, मनोहर श्याम 'ट–टा प्रोफेसर' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्लीय संस्करणः 2019 पृ. 19
4. पाण्डे, अशोक लप्पुझन्नाय हिंद युग्म प्रकाशन, नोएडा संस्करण : 2022 पृ. 35
5 जोशी, मनोहर श्याम 'ट–टा प्रोफेसर' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्लीय संस्करणः 2019 पृ. 16
6. वही, पृ. 30 7. वही, पृ. 24 8. वही, पृ. 21

"हाशिए का समाज और रत्नकुमार सांभरिया का साहित्य"

शोधार्थी–**कु. मोनिका देवी**
शोध निर्देशक–**डॉ. सुनील कुमार,** हिंदी विभाग

शोध सारांश – रत्नकुमार सांभरिया का साहित्य हाशिए के लोगों की संवेदना, उनके यातनाग्रस्त सामाजिक परिवेश, असहाय और शोषण का भयावह यथार्थ, शोषक वर्ग के प्रति संघर्ष और विद्रोह का यथार्थ परक रूप है। घुमन्तु समुदाय को विमुक्त, खानाबदोश, घुमक्कड़ आदि अनेक नामों से जाना जाता है। किसी भी राष्ट्र के उन समुदायों को हाशिए का समाज कहा जाता है, जो उच्च वर्ग की तुलना में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारणों में पिछड़े हुए होते है या उनको छोड़ दिया जाता है अर्थात् 'हाशिए' का समाज मुख्यधारा से बहिष्कृत समाज है। भारतीय परिपेक्ष्य में कालबेलिया, बहुरूपिये, सपेरा, करनट, मदारी, कुचबन्दा, कंजर आदि घुमन्तु समुदाय है जो अपनी आजीविका के लिए घूम–घूम कर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। हाशिए के समुदायों की तरफ समाज का ध्यानाकर्षण करना ही लेखक की नयी पहल है। हाशिए का यह समाज स्वयं को केंद्र में लाने के लिए निरंतर संघर्ष कर रहा है। स्वतंत्रता के इतने वर्षो बाद भी हाशिए के लोगों का जीवन भूख, गरीबी, अशिक्षा और बेरोजगारी के कारण अमानवीय बना हुआ है।

मूल शब्द – हाशिए का समाज, बहिष्कृत, कुचबन्दा, कालबेलिया, अस्तित्व, पारम्परिक।

मूल आलेख – हाशिए का समाज तत्कालीन परिस्थितियों के कारण हाशिए पर चला गया है। 'हाशिया' शब्द आज हमारे वर्तमान समय में सामने आया है। हाशिए का समाज का स्वरूप भी एक सामाजिक अवधारणा है। विद्वानों ने 'हाशिए का समाज' में जिन समस्याओं का उल्लेख किया है वह सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, भौगोलिक आदि कारणों से उत्पन्न हो सकती है। घुमन्तु समाज मुख्यतः अपने पारम्परिक पेशों से जुड़े होते है। जोखिम और अत्यधिक परिश्रम करने के बाद भी घुमंतुओ का जीवन गरीबी में ही व्यतीत हो रहा है। जो घुमन्तुओं के यथार्थ को चित्रित करता है। 'हाशिए के समाज' के स्वरूप को समझने से पहले समाज के विषय में जानकारी होना अति आवश्यक है। दो या दो से अधिक व्यक्तियों का समूह समाज कहलाता है। समाज के बिना मनुष्य का अपना कोई भी अस्तित्व नहीं होता। समाज स्वयं एक संगठन है, जो औपचारिक सम्बन्धों का भाग है जिसमे सहयोग देने वाले व्यक्ति एक–दूसरे के साथ जुड़े हुए है। समाज पारस्परिक सम्बन्धों को कहते है जिसका रूप अप्रत्यक्ष होता है। मनुष्य के बीच पारस्परिक सम्बन्ध प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष होता है अर्थात् दोनों प्रकार से होता है। समाज केवल व्यक्तियों का ही नहीं होता अपितु सभी जीव–जंतुओं का भी अपना समाज होता है। मनुष्य एक प्रबुद्ध प्राणी है। वह समय–समय पर अनेक सम्बन्धों का निर्वाह करता है। समाज में व्यक्ति और समूह दोनों एक सिक्के के दो पहलू है। व्यक्ति के बिना समाज की और समाज के बिना व्यक्ति की कल्पना सम्भव नहीं है।

किसी पृष्ठ पर लेखन करने से पूर्व शीर्ष पर और बायीं ओर कुछ जगह छोड़ दी जाती है। वह छूटा हुआ स्थान ही 'हाशिया' कहलाता है। इसका निहितार्थ यह है कि जिसे केंद्र में स्थान न मिला हो, वही हाशिए का समाज है। हाशिए का समाज वह समाज होता है जिसे किनारे लगा दिया जाता है। अतः वह समाज अपने विशेषाधिकारों से वंचित हो जाता है। यह समाज चिरस्थायी भेदभाव का शिकार होते आये है। वर्तमान भारतीय परिवेश में स्त्री, दलित, आदिवासी, किसान, मजदुर, और अल्पसंख्यक (मुख्यतः मुस्लिम समाज) आदि सभी 'हाशिये' पर है। 'हरिराम मीणा' ने हाशिए के समाज को परिभाषित किया है– "किसी भी राष्ट्र, समाज के उन घटकों के मानव समुदाय के सम्मिलित समाज

को हाशिए का समाज कहा गया है, जो समाज के अगुवा तबके की तुलना में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक स्तर पर किन्ही कारणों से पीछे रह गया है।"[1] इससे यह स्पष्ट होता है कि वह समाज जो सामाजिक, आर्थिक या अन्य किसी कारणों से सभ्य वर्ग से पीछे रह जाते है उनको हाशिए का समाज कहा जाता हैं। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों, नाटकों, एकांकियों, लघुकथाओं, और उपन्यास में हाशिए के लोगों की समस्यायें उद्‌घाटित होती हैं। 'हुकुम की दुग्गी', 'काल तथा अन्य कहानियाँ', 'दलित समाज की कहानियाँ', 'खेत तथा अन्य कहानियाँ', साँप उपन्यास इत्यादि प्रमुख है। जिसमें हाशिए समुदाय की समस्याओं का वर्णन लेखक ने मार्मिक तरीके से किया है। लेखक के साहित्य में ज्यादातर पात्र 'हाशिए समुदाय' से सम्बन्धित है जैसे– बंजारे, सपेरे, बहुरूपिये, कंजर, कुचबंदा आदि। लेखक ने इन समुदायों का यथार्थ जीवन व्यक्त किया है। 'साँप' उपन्यास में लखीनाथ का कथन– "साब हम धरती बिछावाँ। आकास ओढा। अपना पसीना से नहावाँ अर भूख खा के सौ जावाँ।"[2] प्रस्तुत कथन में लेखक रत्नकुमार सांभरिया ने घुमन्तु समुदाय की मार्मिक जीवन दिनचर्या को चिहिन्त किया है। घुमन्तु समुदाय आहार–संग्रह और शिकार पर ही निर्भर होते है। यह समुदाय हजारों की संख्या में होते हुए भी अशिक्षित और बेरोजगार है। हमेशा से खानाबदोश अपने डेरों मे जिन्दगी बसर करते आये है। घुमन्तु समाज के तीज–त्यौहार, शादी–विवाह, परम्पराएँ स्थायी निवास करने वाले समाज से विशिष्ट रही है।

शरणकुमार लिम्बाले के अनुसार–"खानाबदोश जातियों पर तो अस्पृश्यों से भी भयावह अत्याचार हुए है। अस्पृश्यों का गाँव के बाहर ही क्यों न हों, घर है, अलग ही सही पनघट है, श्मशान है, लेकिन खानाबदोशों की दशा इससे भयावह और हृदय दहलाने वाली है। खानाबदोश जातियों को जीने के लिए निरंतर घूमना व संघर्ष करना पड़ता है, उन्हें एक स्थान पर बसेरा नहीं करने दिया जाता है, उनको चोर–अपराधी के रूप में संदेह से देखा जाता है। इन जातियों को गुजारा करने के लिए भीख मांगनी पड़ती है या चोरी करनी पड़ती है। जन्मतः व्यक्ति को अपराधी बनाने वाली यह व्यवस्था स्वयं अपराधी है।"[3] लिम्बाले ने इन समुदायों की पीड़ा और दर्द को अभिव्यक्त करते हुए कहा है कि इन लोगों के पास ना अपने घर होते है और ना अपना श्मशान–घाट होता है। इनको जीवनयापन के लिए भीख मांगनी है इसलिए इन्हे सच्चे अर्थो में हाशिए का समाज कहा जाता है।

'भभूल्या' हाशिए के समाज की खदबदाती पीड़ा को अभिव्यक्त करने वाला नाटक है। घुमन्तु जातियों अर्थात हाशिए के समाज पर हिंदी में लिखा यह प्रथम नाटक है। यह कुचबन्दा समाज पर लिखा गया है। खानाबदोश धियानाराम के पन्नी से बने हुए झोपड़े को 'भभूल्या' उड़ाकर अपने साथ ले जाता है। धियानाराम भभूल्या को कोसते हुए कहता है कि तेरा छोटे पर ही बस चलता है, बड़े लोगों को तू छूकर ही निकल जाता है। ये समुदाय अपने ही देश में, दोहरी मार सह रहे है, एक प्रकृति की और दूसरी तन्त्र की। 'भभूल्या' इसी कथ्य और सत्य को रूपायित करता है। धियानाराम के शब्दों में– "अरे हम तो मौसम बेअसर हो गए है। आंधी–रडुआ, ओला, कांकरा, मेह–पानी, धुल–भभूल्या की परवाह नहीं करते, कतई। इन्ही के बीच जीना है, मरना है।"[4] यह नाटक मानवीय संवेदना के समस्त स्तरों को स्पर्श करता हुआ नजर आता है। साहित्यकार ने नाटक में हाशिए के समाज को यथार्थ वाणी दी है। रत्नकुमार सांभरिया के शब्दों में–"राजस्थान में ही करीब दो लाख ऐसे घुमन्तु, खानाबदोश लोग हैं, जिनकी अपनी जिन्दगीं में अगले पल का कोई ठौर नहीं।"[5] इससे यह स्पष्ट होता है कि केवल राजस्थान राज्य में ही इस समुदाय के बहुत लोग है जो प्रतिदिन अपनी जान हथेली पर लेकर जीवन व्यतीत करते है।

लेखक ने 'भभूल्या' के माध्यम से पुलिस–व्यवस्था की दहशत और आतंक की जीवित दास्तान उदाहरण द्वारा प्रस्तुत की गई है।

डीएनटी अर्थात वे जनजातियाँ, जिनको भारत सरकार ने डिनोटिफाइड यानी विमुक्त करार दिया है। इन समुदायों के लोग आज भी अपनी पहचान के संकट से जूझ रहे है। यह समुदाय आज तक सामाजिक न्याय से पूरी तरह वंचित और विकास की धारा से बहुत दूर है। ब्रिटिश हुकुमत ने जिन कट्टर सशस्त्र विद्रोही समुदायों को क्रिमिनल ट्राइबस एक्ट– 1871 के द्वारा जन्मजात अपराधी घोषित किया था, उन्हें सरकार ने आजादी के बाद 31 अगस्त, 1952 को ब्रिटिश हुकुमत के काले कानून से मुक्त कर दिया था। विभिन्न इतिहासकार एवं विद्वान यह स्वीकार करते है कि ये समुदाय वास्तविक योद्धा थे, इन लोगों पर जन्मजात अपराधी होने का कलंक लगाना अमानवीय है। ये समुदाय ब्रिटिश सरकार की नजर में अपराधी हो सकते है, परन्तु ये भारत के वास्तविक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। प्रो. चौथीराम यादव लिखते है–"दलितों, आदिवासियों, स्त्रियों, किसानों, मजदूरों, व अन्य बहिष्कृत जाति समुदायों की उपेक्षा कर क्या किसी राष्ट्रवाद की कल्पना की जा सकती है? जिसे हाशिए का समाज कहा जाता है, बहुसंख्यक आबादी वाला वही समाज मुख्यधारा का समाज है, जिसे शैक्षिक और आर्थिक अधिकारों से वंचित कर हाशिए पर फेंक दिया गया है।'' हाशिए के समाज में कंजर, नट, बेलदार, बंजारा आदि अनेक समुदाय है जो डीएनटी में शामिल है। मगर पहचान का सवाल आज तक बरकरार है।

बदलती परिस्थिति, परिवहन और औद्योगीकरण के विकास ने घुमंतुओं के सामाजिक महत्त्व को बहुत कम कर दिया है। यातायात के साधन विकसित होने पर 'बंजारों' का माल ढुलाई का काम कम हो गया। रेडियों, टीवी, मोबाईल आदि मनोरंजन के साधन विकसित होने से 'बहुरूपिये' प्रभावित हुए। मिट्टी के खिलोनों की मांग कम होने से 'कुचबंदा' जाति के लोगों का काम–धंधा बंद हो गया अर्थात् बढ़ती पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने इन समुदायों को अलाभकारी बना दिया है। ग्रामीण क्षेत्रों में बेगारी शोषण की कड़वी सच्चाई व्याप्त है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'हिरणी' में घुमन्तु डेरे का यथार्थ वर्णन है। जिसके सदस्य कठिन श्रम–कार्य तथा शिकार पर निर्भर रहते है। ये वही लोग होते है जो अधपेट खाना खाकर संघर्ष करते है। कहानी का पात्र लछीनाथ घुमन्तु जाति के समुदाय का है। सांभरिया के साहित्य में हाशिए का संसार उभरता है। उनके दुःख–दर्द को लेखक ने मानवीय संवेदना के रूप में प्रकट किया है। पात्रों के चरित्र–चित्रण में उनकी वेशभूषा, रहन–सहन, खान–पान, प्रथाएँ, रीति–रिवाज और संस्कारों की जीवन्तता देखने अनुसूचित जनजातियों को समाज के भीतर संरचनागत भेदभाव का सामना करना पड़ता है। 2011 की जनगणना के अनुसार, अनुसूचित जनजातियाँ भारत की जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत है तथा क्षेत्रफल के करीब 15 प्रतिशत भाग पर निवास करती है। यह मुख्यतः कृषि, श्रमिक, मजदूर है। इन आदिवासियों का शोषण समाज के सामंतवादी, पूँजीवादी वर्ग के लोगों ने किया है। घुमन्तु समुदाय के बारे में के.एल. शर्मा ने कहा है कि– "सैद्धांतिक दृष्टि से यद्यपि जनजातियाँ हिन्दू सामाजिक संगठनों का अंग नहीं है परन्तु वे हमेशा वृहद समाज के सम्पर्क में रही है। जनजातियों के क्षेत्रों में रहने वाले और आदिवासियों ने इनका आर्थिक और सामाजिक शोषण किया।"[7] इन समुदाय की वास्तविक जिन्दगी अपनी मार्मिक और कलात्मकता से प्रस्तुत होती है। इन लोगों का जीवन–संघर्ष, विद्रोह एवं वेदना से गुंजित होता है। हाशिए के लोगों के सोच–विचार, चिंताएँ, परस्पर संवाद, और अनुभूतियाँ कलात्मक रूप से व्यक्त हुयी है।

वर्तमान में शिक्षा के प्रसार होने के कारण वंचित एवं घुमक्क्ड वर्ग के लोग अपने भविष्य के प्रति सजग होने लगे है। 'बंजारन' कहानी की रूनाबाई अपनी पुत्री सावितबाई का विवाह एक विधुर व्यक्ति से होने से रोक देती है। वह अपने पति से कहती है कि–"अगर ऐसो अड़ंगो अड़ावेगा कुछ न पाओगा। भले अलग रहो दोनों। मेरी बेटी पढेगी। मैं मजूरी करके उनै पढ़ाऊगी।"[8] इस कहानी के द्वारा लेखक ने आदिवासी समाज में शिक्षा की रोशनी फैलाने का कार्य किया है।

निष्कर्ष : यह कहा जा सकता है रत्नकुमार

सांभरिया ने हाशिए के समुदाय की पीड़ा और दर्द को स्वयं अनुभव किया है। लेखक ने घुमन्तु समुदाय की मार्मिक जीवन दिनचर्या को चिहिन्त किया है। साहित्यकार ने **बंजारन** और **मदारिन** कहानी के माध्यम से घुमन्तु समाज की जीवन शैली, संस्कृति एवं चुनौतियों को समाज के सामने प्रस्तुत किया है। साहित्य में जब विविध अस्मिताएँ अपने स्थान की तलाश कर रही है। घुमन्तु समाज अभी भी चेतनशील होने से कोसों दूर है। रत्नकुमार सांभरिया ने हाशिए के लोगों की रोजमर्रा की शब्दावली का प्रयोग अपने साहित्य में किया है। हरियाणा, पंजाब और राजस्थान की स्थानीय भाषाओं के शब्दों तथा वाक्यों का भरपूर प्रयोग लेखक ने किया है। राजस्थान के आंचलिक शब्दों जैसे–नपुता, बापरो, उकडू, दावण आदि का प्रयोग किया है। जो पाठको के लिए रस और आनंद का कारण बनता है।

शोधार्थी–**कु. मोनिका देवी**
शोध निर्देशक–**डॉ. सुनील कुमार** हिंदी विभाग,
गुरुकुल कांगड़ी (समविश्वविद्यालय),
हरिद्वार (उत्तराखंड)–249404
मोबाईल नंबर– 7617649294

संदर्भ :

1. प्रो. वी. कृष्ण सिंह, डॉ. भीम, आदिवासी विमर्श, पृष्ठ–14
2. रत्नकुमार सांभरिया, साँप, सेतु प्रकाशन, नोएडा, 2022, पृष्ठ–255
3. स. शरणकुमार लिम्बालेरू दलित साहित्य रू वेदना और विद्रोह, दिल्ली, 2010, पृष्ठ–19
4. स. डॉ. विवेक शंकर, डॉ. अनीता वर्मा, समाजद्रष्टा साहित्यकार रत्नकुमार सांभरिया, दृष्टिप्रकाशन, जयपुर, 2020, पृष्ठ–49
5. दैनिक भास्कर (जयपुर) 24.01.2017
6. चौथीराम यादव, उत्तरशती के विमर्श और हाशिए का समाज, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ–13
7. के.एल. शर्मा, भारतीय समाज (एन. सी.ई.आर.टी.), नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ–83
8. स. डॉ. वर्षा वर्मा, रत्नकुमार सांभरिया की चयनित कहानियाँ दृष्टि प्रकाशन, जयपुर, 2023, पृष्ठ–11

जलवायु लक्ष्य, विजन 2030, चुनौतियां, समाधान और आगे की राह

– **पवन कुमार**

सारांश

जलवायु परिवर्तन वर्तमान समय में भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के सामने एक गंभीर चुनौती के रूप में सामने आया है। इतनी गंभीर चुनौती का सामना करने के लिए कोई एक अकेला देश कभी भी कारगर नहीं हो सकता। यह एक वैश्विक मुद्दा है जिस पर दुनिया के हर देश को एक साझा रणनीति के साथ काम करने की जरूरत है। लगातार मौसम के पैटर्न में होते बदलाव के कारण इसके प्रतिकूल प्रभाव से प्रभावित हुए लोगो को उनके जीवन में विभिन प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। वैश्विक प्रयासों के बावजूद भी ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में वांछित कमी नहीं देखी जा रही है। भूमण्डल के तापमान में कोई गिरावट दर्ज नहीं हुई है और लगातार साल दर साल भूमंडलीय ताप में वृद्धि हो रही है। जिसके कारण समुद्र का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है और तटीय देशो को संकट का सामना करना पड़ रहा है। तेजी से हो रहे थर्मल डिस्कम्फर्ट के दुष्प्रभाव भी समय के साथ स्पष्ट रूप से सामने आएंगे। आधुनिक समाज की यह बड़ी समस्या न केवल मानव जगत के लिए है बल्कि जंतु जगत भी इस समस्या से अछूता नहीं रहा है समुद्र के बढ़ते जलस्तर के कारण जल में निवास करने वाली जीवों के प्रजातियों के आवास स्थलों में भारी तबाही हुई है साथ ही साथ विभिन्न जलीय जीव खाद्य संकट से प्रभावित हुये है उनकी प्रजातियों की लगातार विलुप्ति हो रही है। बहुत सी प्रजातियाँ पलायन के लिए मजबूर है। विश्व के कुछ भाग सूखे की समस्या का सामना कर रहे है। इन क्षेत्रों में पानी की समस्या आ खड़ी हुई है। दक्षिण अफ्रीका जैसे देशो में ''जीरो डे'' जैसी कंडीशन हो गयी है। यूएन ने भी कई बार चेताया है कि अगर जलवायु परिवर्तन से होने वाले खतरों को लेकर अगर

प्रभावी कदम नहीं उठाये तो भविष्य में आने वाले गंभीर परिणामो के लिए पूरा विश्व तैयार रहे।

बीज–शब्द–पेरिस समझौता, भूमंडलीय ताप, कार्बन उत्सर्जन, पवन ऊर्जा, एफओएम, सीबीजी।

शोध पद्धति–यह शोध पत्र विभिन पुस्तकों से ली जानकारी, पत्रिकाओं में छपे लेख, अखबारों में पब्लिश आर्टिकल और विभिन डिपार्टमेंट्स की अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी और आकड़ों का विस्तृत विश्लेषण करके लिखा गया है। यह शोध पत्र पूर्णतया द्वितीय आकड़ों पर आधारित शोध पत्र है।

प्रस्तावना

भारत ने जलवायु परिवर्त्तन से भविष्य में होने वाले दुष्परिणामों को देखते हुए अपने कुछ जलवायु लक्ष्य निर्धारित किये है जिनको विजिन 2030 के रूप में 2030 तक पूरा करने के लिए प्रयासरत है। भारत ने नवीनीकरण ऊर्जा क्षेत्र में काफी हद तक उन्नति की है। इंडिया क्लाइमेट एंड डैसबोर्ड की एक रिपोर्ट के अनुसार देश की कुल ऊर्जा उत्पादन क्षमता में (परमाणु ऊर्जा के आलावा) 43.12 प्रतिशत ऊर्जा गैर जीवाश्म ईंधन से प्राप्त होती है। डैशबोर्ड के आकड़े हमे बताते है किं 31 मार्च 2024 तक विगत आठ वर्षों में सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता में में 12 गुना की वृद्धि दर्ज की गयी है।[1] एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2030 तक अपनी आधी बिजली क्षमता गैर जीवाश्म स्त्रोतों से प्राप्त कर लेगा जो की 2015 के पेरिस समझौते के तहत की गयी एक प्रतिबद्धता है। वैसे तो देश की कुल ऊर्जा क्षमता में गैर जीवाश्म ईंधन की कुल हिस्सेदारी 43.12 प्रतिशत है लेकिन कुल बिजली उत्पादन में इसका योगदान मात्र 23.4 प्रतिशत ही है।[2]

भारत अपने जलवायु लक्ष्यों को पाने के भरसक प्रयास में लगा है साथ ही साथ इन लक्ष्यों को हासिल करने हेतु एक व्यापक बदलाव की योजना बनाने की जरूरत है। बिजली आपूर्ति तंत्र के लिए नवीनीकरणीय ऊर्जा, सर्वोत्तम स्त्रोत के रूप में हमारे पास मौजूद है। कार्बन उत्सर्जन को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों पर गौर कर इसके स्थान पर नविन प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने की जरूरत है। भारत में कंप्रेस्ड बायो गैस को एक साफ स्वस्थ ईंधन के रूप में देखा जा सकता है और पवन ऊर्जा की असीम सम्भवनाओं को तलाशने की जरूरत पर ध्यान देना होगा। पर्यावरणीय प्रदूषण को काम करने के उपाय ढूंढने होगें और सौर ऊर्जा को और अधिक कैसे किफायती बनाया जाए। इन सब बातो पर मंथन की जरुरत है। इस प्रकार हम 2015 के पेरिस समझौते की प्रतिबद्धता को पूरा कर सकते है।

क्या है पेरिस समझौता ?

30 नवंबर से 11 दिसंबर, तक 195 देशो की फ्रांस की राजधानी पेरिस में एक बैठक सम्प्पन हुई, जिनका उद्देश्य ग्रीन हाउस गैसों के वैश्विक उत्सर्जन को वैश्विक स्तर पर कम करने को लेकर एक वैश्विक समझौता करना था ताकि जलवायु परिवर्तन से भविष्य में होने वाले गंभीर परिणामों की चोट से बचा जा सके। वर्तमान समय में पेरिस समझौते पर 197 देशो ने हस्ताक्षर कर दिए है।

पेरिस समझौते के कुछ मुख्य बिंदु

समझौते में कहा गया की ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कटोती के साथ प्रत्येक देश की प्रत्येक पांच वर्षों में उत्सर्जन में कटौती के लिए योगदान की समीक्षा की जाएगी। समझौते में कहा गया की प्रत्येक विकसित देश को "जलवायु वित्त" के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने हेतु और नवीनीकरणीय ऊर्जा अपनाने और बढ़ावा देने में विकासशील और अल्पविकसित देशो की मदद करनी होगी गौरतलब है कि कार्बन उत्सर्जन में कमी के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, वैश्विक उत्सर्जन का 90 प्रतिशत से अधिक योगदान देने वाले 186 देशों ने अपने कार्बन कटौती लक्ष्यों को निर्धारित किया हैं, जिन्हें राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (INDC) के रूप में जाना जाता है।

पेरिस समझौता और भारत भारत ने अप्रैल 2016 में औपचारिक रूप से पेरिस समझौते पर हस्ताक्षर किये थे।

भारत के (INDC) के तहत, वर्ष 2030 तक सकल

घरेलू उत्पाद (जीडीपी) उत्सर्जन की तीव्रता को वर्ष 2005 के स्तर की तुलना में 33–35 प्रतिशत तक कम करने का लक्ष्य रखा गया है। भारत को अपने विजिन 2030 के लक्ष्यों को पूरा करने हेतु अपनी वर्तमान योजनाओं में व्यापक बदलाव के साथ–साथ कुछ क्षेत्रों में कूटनीति के साथ काम करना होगा जिनका वर्णन निम्नलिखित है।

नवीनीकरणीय ऊर्जा स्त्रोंतो को और अधिक सरल तथा किफायती बनाने की जरुरत

नवीनीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों के प्रयोग से थर्मल पावर प्लांट्स से उत्सृजित हानिकारक ग्रीन हाउस गैसों में काफी हद तक कटौती की जा सकती है। नवीनीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों के अंतर्गत जैव ऊर्जा, पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा इत्यादि को शामिल किया जाता है। नवीनीकरणीय ऊर्जा के मामले में भारत विश्व में चौथे स्थान पर आता है जिसकी क्षमता 145 गीगावाट है।[3] नवीनीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने भी बहुत सी योजनाओं का क्रियान्वन किया है।

कंप्रेस्ड बायोगैस (सीबीजी)

संपीडित जैव गैस यानि कंप्रेस्ड बायोगैस (सीबीजी) एक स्वच्छ ईंधन के रूप में मानव को उपलब्ध है। इसको बनाने में जीवाश्म ईंधन की कोई भूमिका नहीं होती इसको जीवाश्म रहित ईंधन के रूप में प्रयोग किया है यह खेतों से निकलने वाले अवशेषों और ठोस कचरे से बनता है। कंप्रेस्ड बायोगैस आयातित कंप्रेस्ड नेचुरल गैस का एक बेहतर विकल्प है दोनों के गुण और दहन क्षमता लगभग एक समान होती है। देश में लगभग पांच हजार सीबीजी संयंत्र स्थापित करने की योजना पर काम चल रहा है इस योजना को सतत विकल्प किफायती परिवहन (सातत) कहा जाता है।

सीबीजी को सुचारु रूप से व्यवहार में लाने के लिए सीएनजी के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की आवश्यकता है क्योकि अभी तक यह सीमित है। सीबीजी संयंत्रों तक गैस पाइपलाइन बिछाना काफी मुश्किल भरा काम है। संयंत्रों के आस–पास के क्षेत्रों में पाइपलाइन के बिछने से पूरी गैस के उपयोग को सुनिश्चित किया जा सकता है। कोयले आधारित संयंत्रों में जैव ईंधन की कमी एक बड़ी समस्या है क्योंकि फसल कटाई के बाद खेतों में बचे रहने वाले अवशेषों, विशेष तौर पर पराली आदि को इक्क्ठा करना काफी मसक्कत भरा कार्य है क्योकि यह कार्य अभी तक मानव द्वारा स्वयं किया जाता है इसमें अति आधुनिक मशीनों का प्रयोग अभी तक बहुत ही सीमित है। भारत में मशीनों की कमी एक मुख्य कारण के रुप में देखी जा सकती है इसके लिए भारत सरकार को चाहिए कि इस तरह की उच्च तकनिकी से लैस मशीनों का निर्माण देश के अंदर हो इसके लिए मशीने बनाने वाली कम्पनियों को सब्सिडी देने का प्रावधान हो ताकि मशीने बनाने वाली फर्म मशीनों के निर्माण में अपनी रूचि दिखाएं। सीबीजी बनाने के बाद जो अवशेष रहता है उसे जैविक खाद के रूप में प्रयोग किया जा सकता है इस तरह बने खाद को फर्मेन्टेड आर्गेनिक मैन्योर (एफओएम) कहा जाता है। देश के ज्यादातर लोगों को एफओएम के बारे जानकारी बहुत ही सीमित है। सरकार को चाहिए की लोगो को एफओएम के बारे में अधिक से अधिक जानकारी देने हेतु जागरूकता प्रोग्राम चलाने चाहिए साथ ही साथ इसके उपयोग को लेकर लोगों को प्रशिक्षण देना चाहिए।

पवन ऊर्जा

भारत में नवीनीकरणीय ऊर्जा क्षमता जिसमे 140 गीगावाट जमीनीं परियोजनाओं से और 32 गीगावाट समुंद्री परियोजनाओं से आएगा।[4] भारत में पवन ऊर्जा क्षेत्रों में सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र तमिलनाडु, गुजरात, और कर्नाटक है देश की प्रथम पवन ऊर्जा परियोजना भी इन्ही क्षेत्रों में स्थापित की गयी थी। पवन ऊर्जा उत्पादन में मौसम एक प्रभावशाली कारक है अलग–अलग महीनों में उत्पादन में भी बदलाव आते रहते है। आमतौर पर मई, जून, जुलाई माह में सबसे अधिक उत्पादन होता है जबकि दिसंबर और जनवरी में सबसे कम होता है।

सरकार को पवन ऊर्जा अक्षमता को बढ़ावा देने

हेतु इसके विस्तार प्रकिया को भी सरल बनाना चाहिए जिसमे सबसे बड़ी बाधा भूमि अधिग्रहण की है। इसके लिए भूमि अधिग्रहण की प्रकिया को आसान बनाने, भूमि का उपयोग किन–किन दिशा–निर्देशों के अनुसार होगा यानी भूमि उपयोग और जमीन के मालिकों को उनकी भूमि का उचित मुआवजा हासिल हो इन सभी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए कुछ सटीक नीतियों का निर्माण करना चाहिए।

सौर ऊर्जा सौर ऊर्जा एक उपहार के रूप में मानव को मिली है जिसके इस्तेमाल से पर्यावरण को किसी भी प्रकार से कोई क्षति नहीं होती। पर्यावरण प्रदूषण को कम करने की सबसे आसान विधि है इसके प्रयोग से कार्बर्न उत्सृजन को कम किया जा सकता है। एक रिपोर्ट के अनुसार वित्तीय वर्ष 2013–2014 में सौर ऊर्जा से स्थापित क्षमता 1.2 गीगावाट से बढ़कर 82 गीगावाट हो गयी है।[5] सौर ऊर्जा सयंत्र स्थापित करना अपने आप में एक बड़ी चुनौती है जिसमे जमींनं से जुडी एक महत्वपूर्ण समस्या है चूँकि सौर सयंत्रों के लिए बहुत सारी जमींन की आवश्यकता होती है। जमींन की उपलब्धता की समस्या से निपटने के लिए लिए हमे कुछ वैकल्पिक स्त्रोत अपनाने होंगे। सरकार को उच्च तकनीकि का प्रयोग करके जमींन के स्थान पर तैरते सोलर ऊर्जा संयंत्र लगाने चाहिए। एक ही खेत में कृषि कार्यों के साथ–साथ सौर ऊर्जा संयंत्र लगाकर भी सौर ऊर्जा के उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है और पर्यावरण को होने वाले नुकसान से भी बचा जा सकता है। गाँव–शहरों में सौर ऊर्जा का चलन तो है लेकिन अभी तक इसके संतोष जनक परिणाम नहीं आएं है। घरो की छतों पर लगने वाले सोलर पैनल अधिक महंगे होने के कारण लोगों की पहुंच से अभी काफी दूर है। भारत में रूफटॉप सोलर पैनल केवल 13 गीगावाट बिजली पैदा करते है जिसमे से केवल 30 प्रतिशत ही आवासीय क्षेत्र से आती है।[6] घरों पर इस तरह के रूफटॉप पैनल की सख्यां में बढ़ोतरी हो इसके लिए जरुरी है कि सरकार बिजली वितरण कंपनियों में उनके परिचालन प्रबंधन में मूलभूत सुधार करें। महँगी ताप आधारित विधुत की खरीद को तभी कम किया जा सकता है जब सोलर पैनल आधारित विद्युत वाली कम्पनियों में आवश्यक सुधार हो ताकि वे सस्ती सौर ऊर्जा खरीद सकें। ताप विधुत संयंत्रों को कम करके ही हम पर्यावरण में होने वाले कार्बन उत्सर्जन को कम कर सकते है।

उद्योग सुधार भारत में कुल प्रदूषण में से उद्योगों से निकलने वाले प्रदूषण का योगदान 22 प्रतिशत है।[7] पर्यावरणीय प्रदूषण को सबसे ज्यादा जो उद्योग बढ़ाते है उनमें स्टील, सीमेंट, एल्मिनियम प्रमुख है। पर्यावरणीय प्रदूषण को रोकने हेतु उद्योग प्रणाली में सुधार अति आवश्यक है इसके लिए भारत सरकार को चाहिए कि स्वच्छ ईंधन का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाये, कम प्रदूषण फैलाने वाली उच्च तकनीक का प्रयोग हो, रसायन और रेफाइनरी जैसे उधोग जिनसे वाष्पशील जहरीले कार्बनिक यौगिक भरी मात्रा में पर्यावरण में पहुंचते है, इस तरह के उद्योगों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है तभी हम जलवायु परिवर्तन से होने वाले खतरों को टाल सकते है।

जल –स्वच्छता में सुधार जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। जल हमे एक बहुमूल्य उपहार के रूप में मिला है लेकिन इसका उचित रूप में उपयोग न करके इस बहुमूल्य उपहार को हम खत्म करने में तुले है। गाँव में प्रति व्यक्ति 55 लीटर पानी नल से प्राप्त होता है लेकिन इसका लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा ग्रेवाटर के रूप बदल जाता है।[8]

ग्रे वाटर से अभिप्राय उस जल से है जो अपशिष्ट के रूप में रह जाता है जैसे जो जल गैर –शौचालय प्लंबिंग सिस्टम जैसे हैंड बेसिन, कपड़े धोने वाली मशीन, शॉवर और बाथरूम से निकलता है। स्वच्छ भारत मिशन के द्वारा ग्रे वाटर के प्रबंधन को प्राथमिकता पर रखता है जिसमे पानी को शोख लेने वाले गढ्ढे, किचन गार्डन का उपयोग शामिल है। ग्रे वाटर से होने वाली पर्यावरणीय हानि को भी मद्देनजर रखकर कुछ सुधारों की आवश्यकता है जैसे ग्रे वाटर को किसी तालाब या जोहड़ में न बहा कर उसका प्रबंधन ग्रे वाटर

के आस पास के क्षेत्र में करना चाहिए।

निष्कर्ष

जलवायु परिवर्तन से होने वाले पर्यावरणीय हानि को रोकने के लिए पूरी दुनिया को एक साथ एक मंच पर आने की जरूरत है। जलवायु परिवर्तन की समस्या किसी एक देश की नहीं ब्लकि वैश्विक है और इसका खामियाजा निकट भविष्य में पूरी दुनियां को भुगतना पड़ेगा। उपर्युक्त संभावनाओं और सुधारो के अतिरिक्त और भी क्षेत्र है जिनको ध्यान में रखकर आगे की राह तय की जा सकती है जैसे वे उद्योग जो काफी पुराने हो चुके है तथा पर्यावरणीय क्षति में अपना योगदान दे रहे है उनकी मरम्मत करने की जरूरत है ताकि पर्यावरण में कार्बन का उत्सर्जन कम से कम हो । भारतीय उद्योग प्रणाली में स्वच्छ ईंधन का उपयोग, इसके अतिरिक्त हमें सभी स्वछता मिशनों पर निष्ठापूर्वक काम करने की जरूरत है शहरों खासतौर पर रिहायशी क्षेत्रों में लगे कूड़े के ढेरों को कम कैसे किया जाए इसके लिए कूड़ा प्रबंधन या इसका निपटान कैसे हों इन सब बिन्दुओं पर काम करना होगा क्योकिं जलवायु परिवर्तन से पर्यावरण में बढ़ रहे लगातार प्रदूषण में कूड़े के ढेरों का भी योगदान हैं। इसके लिए कूड़े को खुले में न फेंकने के बारे में लोगो को जागरूक करना चाहिए। जलवायु परिवर्तन के खतरे से निपटने हेतु जैव विविधता संरक्षण बहुत जरुरी है पेड़ों की कटाई पर रोक, अधिक से अधिक पेड़ लगाना, पर्वत, पहाड़, जंगल, नदियों के संरक्षण हेतु मास्टर प्लान तैयार करना आदि महत्वपूर्ण कार्य हैं। भविष्य में आने आने वाले गंभीर परिणामों से बचने हेतुं पूरे विश्व को एक साझा रणनीति पर काम करने की जरूरत है।

- Pawan Kumar
Assistant Professor of Geography
Govt- College Birohar Jhajjar Haryana
Contact 9891800340

संदर्भ :

1. इंडिया क्लाइमेट एंड एनर्जी डेशबोर्ड https://iced-niti-gov-in/
2. देव तत्रिशांत, सेनगुप्ता तम्मंना, गोश्वामी अवंतिका, डाउन टू अर्थ, जुलाई 2024, पेज नंबर 11
3. यादव कुमार नीवित ,दास बिनित, जैन राहुल, पोसवाल अरविन्द ,खन्ना वाणी, डाउन टू अर्थ।, जुलाई 2024, पेज नंबर 12
4. यादव कुमार नीवित, दास बिनित, जैन राहुल, पोसवाल अरविन्द, खन्ना वाणी ,डाउन टू अर्थ, जुलाई 2024, पेज नंबर 13
5. नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय https://mnre.gov.in/en/#:~:text=MINISTRY%20OF%20NEW%20AND%20RENEWABLE%20ENERGY
6 यादव कुमार नीवित, दास बिनित, जैन राहुल, पोसवाल अरविन्द ,खन्ना वाणी ,डाउन टू अर्थ।, जुलाई 2024, पेज नंबर 12
7. यादव कुमार नीवित, कुमार पार्थ ,वर्मा श्रेया ,अग्रवाल अनुभा ,डाउन टू अर्थ।,जुलाई 2024, पेज नंबर 15
8. कपूर दीपेन्द्र, सेनगुप्ता सुष्मिता, सिंघल सुमिता, डाउन टू अर्थ, जुलाई 2024, पेज नंबर 16

Martyrdom at Sea : Historical Reflections on the INS Sindhuratna Incident and Lt. Commander Kapish Singh Muwal's Sacrifice

- Dr. Amardeep Associate
Professor of History

Abstract

India gained independence in 1947 after prolonged British rule, largely sustained by strong defense forces. Indian defense personnel played a crucial role in British victories, particularly

during the First and Second World Wars. However, the loyalty of Indian forces waned as the independence movement gained momentum. This became evident in February 1946, when Indian sailors staged the Royal Indian Navy Mutiny, protesting discrimination by the British. The mutiny involved 78 ships, 20 shore establishments, and over 20,000 sailors, marking a pivotal moment in India's freedom struggle. The paper also highlights the courage of Lieutenant Commander Kapish Singh Muwal during the INS Sindhuratna mishap in 2014. Despite being a tragic naval accident, the incident showcased unparalleled bravery, selflessness, and sacrifice by Muwal and Lieutenant Commander Manoranjan Kumar. This study commemorates Muwal's valour and supreme sacrifice, offering a lens to celebrate the unsung heroes of the Indian Navy.

I

INS Sindhuratna : Challenges and Legacy of Indian Submarining

Submarining is a vital component of the Indian Navy's defense system, ensuring the nation's safety and security. It is an inherently dangerous and challenging profession, reserved for volunteers drawn from serving navy personnel. Submarining is typically a young man's career, with commanding officers of conventional submarines transitioning to staff roles by their late thirties. The selection process is rigorous, including psychological tests to assess candidates' ability to endure prolonged periods in confined spaces under challenging conditions. Submariners undergo intense training and develop strong camaraderie, often forming lifelong bonds. Not surprisingly, the camaraderie is close and submariners make friends for life.[1] The Indian submarine service began in 1967 with the commissioning of its first submarine, INS Kalvari, which set strict safety standards from its inception.

INS Sindhuratna, a Sindhughosh-class submarine, is part of the Kilo-class diesel- electric submarines (designated 877EKM). Built through a contract between Rosvooruzhenie and India's Ministry of Defence, these submarines have a displacement of 3,000 tonnes, a maximum diving depth of 300 meters, and a top speed of 18 knots. They can operate independently for 45 days with a crew of 53.2 Commissioned on December 22, 1988, the Sindhughosh-class submarines are equipped with anechoic rubber tiles, allowing them to

operate silently in combat. Armed with supersonic land-attack missiles, they are formidable platforms capable of influencing ground events in South Asia.

Rear Admiral Raja Menon, a retired Indian Navy officer, highlighted the demanding nature of submarining, emphasizing the catastrophic potential of emergencies in submerged submarines. Such an event occurred aboard INS Sindhuratna, 100 miles west of Mumbai, putting the crew's extensive emergency training to the test. The "Kilo" class's design, with watertight compartments, offers significant resistance to flooding and fire. A damage control drill requires a damaged compartment to be "isolated" and the unspoken anxiety is, of course, the fate of the crew who are isolated.[3]

Selfless Sacrifice : Lt Cdr Muwal and INS Sindhuratna, 26th Feb 2014

Lieutenant Commander Kapish Singh Muwal (52360 Z) joined INS Sindhuratna in August 2011 as the Deputy Electrical Officer and Officer-in-Charge (Vth Compartment). On 25 February 2014, with 94 crew members onboard, INS Sindhuratna set sail for a post-refit sea examination. During the early hours of 26 February, around 0530 hours, excessive smoke was reported in the IIIrd compartment, which housed one-half of the submarine's main batteries.

Upon hearing of the emergency, Lt Cdr Kapish Singh Muwal immediately rushed to the IIIrd compartment, joined by his colleague Lieutenant Commander Manoranjan Kumar, who was the Officer-in-Charge of the compartment. As senior officers, they mobilized personnel and damage control assets, taking swift charge of firefighting efforts. Recognizing the potential catastrophic damage to the battery compartment, Lt Cdr Muwal utilized his in-depth knowledge to lead the team in combating the fire, despite the increasing heat and dense smoke.

With unmatched determination, both officers fought relentlessly, ensuring the evacuation of 13 crew members from the danger zone when conditions became critical for survival. Their leadership and technical inputs to the Command Post were instrumental in containing the damage and preventing the fire from reaching the battery compartment—a situation that could have led to the total loss of the submarine. Even as breathing became nearly impossible, they prioritized the safety of their crew and continued to combat the emergency undeterred.

Lt Cdr Kapish Singh Muwal and Lt Cdr Manoranjan Kumar were last seen fighting the fire, refusing to abandon their posts. Their courageous actions ensured the survival of all 94 crew members and safeguarded the submarine from extensive damage. Their selflessness, bravery, and adherence to the ethos of "Service before Self" epitomize the finest traditions of the Indian Navy. For his unparalleled courage and sacrifice, Lieutenant Commander Kapish Singh Muwal was posthumously awarded the Shaurya Chakra by the President of India.[4]

II

Legacy of Duty and Sacrifice :

Lt Commander Kapish Singh Muwal's journey was one of exceptional dedication and patriotism. Born on January 19, 1986, in Mumbai, Kapish hailed from a village called Bandaheri Mundhal in Hisar district, Haryana. His father, Commander Ishwar Singh Muwal (Retd.), served in the Indian Navy, and his disciplined lifestyle profoundly inspired Kapish to pursue a career in the armed forces. Kapish's mother, Dayawati Singh, recalled his unwavering desire to serve the nation. He found his calling in the Indian Navy, which remained his first love."[5]

Kapish was an outstanding student throughout his academic life. He consistently excelled in school, securing distinction in his senior school exams and achieving 95% marks in his senior secondary exams under the CBSE board. He pursued Physics Honours at St. Stephen's College, Delhi University, but his path changed when he was selected through the 10+2 Technical Entry Scheme of the Indian Navy in January 2004. Commissioned as a Sub-Lieutenant on January 1, 2008, after completing his B.Tech degree from Jawaharlal Nehru University, New Delhi, Kapish was awarded the prestigious Sword of Honour during his naval training, a testament to his all-round excellence. He aspired to rise to the rank of Rear Admiral, embodying his commitment to the service.

Kapish's younger brother, Ashish Singh Muwal, spoke of his bravery and dedication. "My brother was a brave man," Ashish said. "He always said he would love to die for the country. When I asked why he risked his life on submarines, he would reply, ‘Somebody has to do it. Why should I pass the buck?’”[6]- Kapish's sense of duty always came first, even above personal comfort. Tragically, the family missed his final

call before he boarded the submarine, never to hear his voice again.[7]

The Sindhuratna incident also highlighted systemic challenges within the Navy. Rear Admiral Raja Menon (Retd.) noted that the tragedy revealed deeper issues beyond the gallantry displayed by the submarine crew. Operating a 26-year-old submarine with outdated batteries, owing to delays in the procurement of replacements, placed undue risk on the crew. Bureaucratic delays and unresponsive governance were significant contributors to the incident. The resignation of the Chief of the Navy in protest underscored the severity of the situation, as he took moral responsibility for the deteriorating state of India's submarine fleet.[8]

The loss of Lt Commander Kapish Muwal was a devastating reminder of the courage and sacrifice required in service to the nation, and a wake-up call for systemic reform to safeguard the lives of India's brave sailors.

III

Conclusion :

Lieutenant Commander Kapish Singh Muwal and Lieutenant Manoranjan Kumar sacrificed their lives on February 26, 2014, not due to hesitation in escaping toxic gases, but to save their comrades aboard INS Sindhuratna. Their ultimate sacrifice exemplified the highest traditions of the Indian defense forces. A senior naval officer described their deaths as an act of selflessness to protect others. While Admiral Devendra Kumar Joshi accepted moral responsibility and resigned, it highlighted a deeper issue. Every soldier would prefer to sacrifice his life during the battlefield. No one want to die in peace time, rather everyone would want to take credit to serve the nation with full potential. Preventative measures, not resignations, are needed to safeguard future heroes like Muwal.

- Dr. Amardeep
Associate Professor in History
Govt. P.G. College, Sector 1,
Panchkula
Mob. 9466960340

References :

1. Raja Menon, retired as Rear Admiral in the Indian Navy, The Hindu, March 02, 2014- Sindhuratna and Beyond

2.https://www.indiannavy.nic.in/content/submarines-active

3. Raja Menon, retired as Rear Admiral in the Indian Navy, The Hindu, March 02, 2014- Sindhuratna and Beyond

4 https://www.honourpoint.in/profile/lieutenant-commander-kapish-singh-muwal-sc/

5. The Gazette of India, New Delhi, November 15- November 21, 2014 & http:// galantry awards.gov.in/Awardee/kapish-singh-muwal

6. Personal interview of Ishwar Singh, Ex-Commander from Indian Navy at Bandaheri, Hisar (Haryana) on 26 February 2016

Understanding Dr. Babasaheb Ambedkar's Contribution to Journalism, Through a Study of His Newspapers

- Dr. Jayant Wankhade
Assistant Professor (History)

Introduction : -

Dr. Babasaheb Ambedkar was a great social reformer, a valiant champion of human rights and an emancipator of the downtrodden masses of India, who dedicated all his life to awaken the social conscience of modern India.

He always considered that for any successful social reform movement newspapers are very essential, without newspapers social reform movement is just like a bird without wings.

Mooknayak

For this purpose, he started the 'Mooknayak' (January 31, 1920) 'Leader of the silent' in Bombay, with the help of another great visionary: Chattrapati Shahu, The Maharaja of Kolhapur. P. N. Bhatkar and D. D. Gholap were the first and second editors of the Mooknayak respectively.

In the first issue of the Mooknayak (January 31, 1920), Dr. Ambedkar advocated the need for a forum, "to deliberate on the injustices let loose or likely to be imposed on us and other depressed people and to think of their future development and appropriate strategies towards it critically".

Dr. Ambedkar exhorted to the Dalits 'to rise, awake, don't tolerate injustice and social slavery'; to give education to their children and break the shackles of social slavery.

First time in history of the Dalit press in Marathi language, the Mooknayak played significant contribution for the Dalit rising. In the Mooknayak (Leader of the silent) the 'silent' had finally found a 'leader'.

The Bahishkrit Bharat

The Bahishkrit Bharat newspaper (The ostracized India) started by Dr. Ambedkar on April 3, 1927. In the first issue of the Bahishkrit Bharat newspaper, Dr. Ambedkar described the rigid Hindu religious system. He considered that disparity was the salient feature of the Hindu religion. The Bahishkrit Bharat newspaper mentioned that Dr. Ambedkar wanted to emphasize that the Dalits have to undertake work of social awareness very enthusiastically. They must not let this fire of awakening douse.

While addressing Mahad Satyagraha conference Mahad (December 25-27, 1927) Dr. Ambedkar told the Dalits that the Mahad Satyagraha was for laying the foundation of equality. His speech was reported in the Bahishkrit Bharat

newspaper. Here Dr. Ambedkar told the Dalits that the touchables of Mahad were opposing the Dalits in drawing water from Mahad lake not because its water will get polluted or it will vanish in thin air, but, they were opposing it because they do not want to accept that the Dalits are equal to them.

In one of the articles of the Bahishkrit Bharat newspaper, Dr. Ambedkar requested the Dalits, that they should extend all possible support to the Parvati Satyagraha in Poona. Dr. Ambedkar's the Bahishkrit Bharat newspaper inspired the Dalits to assert their rights and vehemently opposed injustice. The Bahishkrit Bharat newspaper played significant role in Mahad water Satyagraha which took place on March 20, 1927 at Mahad. The Bahishkrit Bharat promoted and encouraged the Dalits to take active part in Mahad water Satyagraha.

During this movement, the conservative newspapers, like the Chabukswar, the Bhala of Mr. Bhopatkar and the Kesari, took the side of conservative ideology and tried to defame Dr. Ambedkar and his social reform movement. But Dr. Ambedkar also used his Bahishkrit Bharat newspaper to give fitting reply to conservative newspapers.

The Bahishkrit Bharat newspaper's time period was April 3, 1927 to November 15, 1929, i.e. just two to three years. Dr. Ambedkar was the editor of the Bahishkrit Bharat newspaper.

Among his newspapers the Bahishkrit Bharat was his only newspaper where he was the editor himself. This newspaper galvanized the Dalits. Dr. Ambedkar used the Bahishkrit Bharat to propagate his views. This newspaper socially awakened the Dalits, helped them to assert their identity, to vindicate their rights, to stand against the injustice and the social slavery.

This newspaper exposed the regressive image of the Bhala, the Chabukswar and the Kesari newspapers. This newspaper revolutionized the life of the Dalits.

The Janata

The Janata (The public) newspaper started by Dr. Ambedkar on November 24, 1930. The Mooknayak and the Bahishkrit Bharat newspapers were short lived because of financially difficulty.

To broaden the scope of social reform movement, to promote national integration, to attract large masses in the mission of the Dalit emancipation, the name 'The Janata' (The Public) was given to this newspaper. D. V. Naik was the first editor of the Janata newspaper.

In one of the articles of the Janata newspaper, Dr. Ambedkar instructed the

dalits that, they ‘should become like a tiger', then nobody will exploit them, and nobody will challenge them. They should be daring and fearless.

The Janata paper lived from November 24, 1930 to January 28, 1956. As compare to the Mooknayak, the Bahishkrit Bharat and the Samata the Janata newspapes life was long near about twenty five years. 'Tell a slave he is slave and then he will revolt against the slavery'. This statement always published in the Janata newspaper to give inspiration to the Dalit masses.

The Janata newspaper played a significant role in Dalit movement particularly in Nashik temple Satyagraha. This newspaper gave vivid information about the works of Dr. Ambedkar in the Round Table conferences, the Poona pact, etc.

The Prabudha Bharat

The Prabudha Bharat newspaper started by Dr. Ambedkar on February 4, 1956. In its first issue B. C. Kamble wrote that, to enlighten India, was the main mission of the Prabudha Bharat newspaper.

While addressing public meeting of Scheduled Caste Federation at Agra (March 18, 1956) Dr. Ambedkar said to the Dalits: 'self-respect is more important than food'. The Prabhudha Bharat newspaper reported this speech in which Dr. Ambedkar urged to the Dalits that there will not be much improvement in their living conditions unless they leave the villages and settle down in the cities.

According to Dr. G. Pantavane (Erudite scholar of Marathi literature) the Marathi press gave importance to the journalist work of Tilak, Agarkar and Kelkar, but ignored the work of Dr. Ambedkar.

Dr. Ambedkar was a veritable journalist. Through his journalism and newspapers he awakened the Dalit social conscience. He galvanized the Dalits to assert their identity, to vindicate their human rights and to stand against the injustice and the social slavery.

CONCLUSION : -

The Marathi press especially the Dalit newspapers like the mooknayak, the Bahishkrit Bharat, the Samata, the Janata and the Prabhudha Bharat played a significant contribution in the Dalit movement. These newspapers socially awaken the Dalit masses; they gave a self respect identity to the Dalits. Through the Mooknayak Dr. Ambedkar exhorted to the Dalits to give up disgraceful life, believe in self- respect, adopt zero tolerance attitude against social injustice, to give education their children and break the shackles of social slavery.

The newspapers like the Dinmitra, the Induprakash the Dnyan Prakash and

the Subhodhpatrika gave the space for the Dalits problem and their questions, but that was not enough, they did not give any social revolutionary message.

The Bahishkri bharat newspaper was started by Dr. Ambedkar (1927). Through the Bahishkrit Bharat newspaper Dr. Ambedkar inspired the Dalits to assert their rights and vehemently opposed injustice. The Bahishkrit Bharat newspaper played significant role in Mahad water Satyagraha (1927). The Janata newspaper was started by Dr. Ambedkar (1930). As compare to the Mooknayak, and the Bahishkrit Bharat, the Janata newspaper's life was longer, about 25 years. The Janata newspaper played a significant role in Nashik Temple Satyagraha (1930-1934). Through the Janata newspaper, Dr Ambedkar propagated his thoughts among the Dalits.

The Janata newspaper socially, politically, educationally and financially awakened and inspired the Dalits. The Prabhudha Bharat newspaper was started by Ambedkar (1956). Through the Probhudha Bharat Dr. Ambedkar tried his best to convince the Dalits that Buddhism is the answer to their social slavery. The newspapers like the Dinmitra, the Induprakash, the Dnyanprakash and the Subhodhpatrika gave space for the problems of Dalit and their questions but that was not enough, as no social revolutionary message was given by them, no concrete solutions about how to solve their problems, how to eradicate untouchability, etc. we offered.

Dr. Ambedkar through his newspapers the Mooknayak, the Bahishkrit Bharat, the Janata and the Prabhudha Bharat gave revolutionary message to the Dalits to rise, awaken and not tolerate injustice and social slavery.

- Dr. Jayant Wankhade,
Assistant Professor (History),
Kirti M. Doongursee College, Mumbai
Mob.-8108127162

References :

1. Dr. Babasaheb Ambedkar- writings and speeches, Vol. 17 (1 to 3), Government of Maharashtra Publication, 2003, Mumbai.
2. Dr. Babasaheb Ambedkar- writings and speeches, Vol. 18 (1 to 3), Government of Maharashtra Publication, 2003, Mumbai.
3. Dr. Babasaheb Ambedkar Yanchi Patrakarita, Dr. Babasaheb Ambedkar- writings and speeches, Vol. 19, Government of Maharashtra Publication, 2005, Mumbai.
4. Dr. Babasaheb Ambedkar Yanchi Patrakarita, Dr. Babasaheb Ambedkar- writings and speeches, Vol. 20, Government of Maharashtra Publication, 2005, Mumbai.
5. Jadhav Narendra, 'Dr. Ambedkar' Biography, Konark Publication, Delhi, 2014.
6. Pantavane Dr. Gangadhar, 'Patrakar Dr. Ambedkar' prefaces page-3,Abhijeet Prakashan, Nagpur, 1987.

एक तरफ कुप्रथा और दूसरी तरफ उद्धारक बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर

– बिकलेस कुमार गुप्ता

सारांश

बाबा साहब अंबेडकर उम्र भर कुप्रथा को समाप्त करने के लिए लगे रहे। ऐसे महामानव रहे जिनका हृदय अत्यंत विशाल रहा दूसरे की पीड़ा को देखकर, दूसरे की भावनाओं को समझ कर उनके हित के लिए सुधारात्मक प्रयास करते रहे। प्रथाएं ऐसी थी जो हर एक इंसान के लिए विनाश की ओर जाने वाली मार्ग को सही दिशा और ज्ञान देकर अपने कर्तव्य को निभा गए । पूरा जीवन दलित समुदाय में होने वाली बर्बरता को समाप्त करने के लिए कुर्बान कर दिया, क्योंकि यही दुष्ट प्रथा यदि यथावत रहती व संविधान बनाकर इन प्रथाओं की समाप्ति अगर नहीं किए होते तो संभवत आज भी वही दशा और दुर्दशा होती जो पहले थी। जहां व्यक्ति को पानी पीने के लिए, मंदिरों में प्रवेश करने के लिए जूझना पड़ता था, बिना शिक्षा व कानून के मानव असभ्य ही होते, उनके समय में और उस दलित समुदाय जो छुआछूत प्रथा थी, आज वह एक दंडनीय अपराध बन चुकी है। यह लेख उन पुरानी प्रथाओं के बारे में वर्णित है।जो एक युग तक चलाएं मान थी। जहां पर लोगों को पैरों तले कुचला जाता था उन्हें जीने का अवसर नहीं था। जीना और मरना उन कटु अनुभव से हुआ करता था जिसे हम आज के इस काल में महसूस नहीं कर सकते, क्यूकि हमारा यह संविधान हमारे लिए सुरक्षा ढाल बन कर खड़ी है।

मुख्य शब्द–कुप्रथा, बाबासाहब, संघर्ष, संविधान

शोध–लेख

यह दूषित कुप्रथा ने मानव की मति को ही मार दिया होगा, और व्यक्ति कब से इस आडंबर प्रथा में रहते होंगे, यह सब सारी बातें मन को बहुत व्याकुल करती है न जाने ऐसी परंपराएं, जहां पर किसी को उँच, नीच, अमीर, गरीब, छुआछूत और ऐसे घिनौनी कार्य को महान दृष्टि में रखा होगा व आनंद लेता होगा न जाने कितनी आलोचनाओं, अपराधों का सामना समाज के उन निर्दोष वर्गों को करना व सहना पड़ा होगा जो समाज कल्याण में ही अपना जीवन लगा दिए थे। ऐसी प्रथाएं समाज में विधमान थी, जिसे मनुष्य ग्रसित हो चुका था और यही कुप्रथा को अपनी बहादुरी समझकर निम्न वर्गों को परेशान किया जाता रहा होगा। किन्तु यह दूषित प्रथा उनकी खुद के लिए और समाज, राज्य, देश के लिए विनाश से कम नहीं रही। कैसे किस तरह से समाज का कल्याण करना है इन सभी बातों से व्यक्ति भटक कर 'छूने मात्र से शुद्ध–अशुद्ध' इन प्रथाओं में फंसकर अनैतिक कार्यों में लिप्त रहे, भीमराव अंबेडकर ऐसे महापुरुष जो इन सभी घटनाओं को अपनी आंखों से देखें लोगों की आलोचनाओं को सहे, अपने समुदाय अपने वर्गों को उस समय विद्यमान अशिक्षित, अल्प विकसित, पिछड़ेपन, जात–पात, दलित समुदायों का कल्याण करने के लिए पूरी जोर से संघर्ष किये। एक तरफ यह सारी कुप्रथाएं और उनसे लड़ते हुए दिखे बाबा साहब अंबेडकर यह कोई आसान कार्य नहीं है कि हजारो सालो से चली आ रही निम्न सोच रखने वाले कुप्रथा से आसानी से लड़ा जा सके, वो भी अकेला यह कहीं ना कहीं एक दैवीय" महापुरुष का कार्य है। बाबा साहब के मेरी आत्मकथा में लिखित घटनाएं "पानी पीने को ना देना, किराए के मकान में रहने पर भी उन्हें मकान न मिलना"लोगों का ताना–बाना सुनना लोगों के द्वारा दुष्ट प्रथाओं को महत्व पहले देना, इन दकियानुसी परंपराओं को जड़ से मिटाने के लिए ही वचनबद्ध हो गए। उन्होंने लगातार संघर्ष कर, परिवार की बलिदानी देकर यहां तक कि उनकी पत्नी भी बाबा साहब की इन साहसिक कदम में सहायता प्रदान कर उन्हें अग्रसर होने के लिए प्रेरित करती रही। मेरी आत्मकथा भीमराव अंबेडकर में वर्णित बाबा साहब अगर चाहते तो अवश्य ही ''किसी उच्च पद पर आसीन हो सकते थे" किंतु इन्होंने दलित समुदायों की पीड़ा को समझा और उनके निवारण करने के लिए ही लोगों से वाद–विवाद कर बैठना इनके त्याग और बलिदान को बयां करती है। यह कोई आम आदमी नहीं कर सकता है यह एक महामानव ही कर सकता है, जो दूसरे की पीड़ा को समझना व दूसरे की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझ कर और उसके

निवारण करने के लिए अपनी खुशियों का बलिदान दे दे। 'मेरी आत्मकथा, मेरी कहानी मेरी जुबानी' पृष्ठ 148 में वर्णित बाबा साहब कहते है कि "यदि मेरी प्रतिष्ठा नष्ट हो जाती है तो मेरे जीवन का सारा उद्देश्य नष्ट हो जाएगा मेरे लोग जिनके लिए मैंने अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया है जो लोग मुझे देवता मानते हैं वह सभी मुझ पर विश्वास खो देंगे" अर्थात बाबा साहेब दलित समाज के साथ होने वाले कुप्रथा को नष्ट कर के करोडो लोगो के मन मंदिर में ईश्वर के रूप में विधमान हो गए, बाबा साहेब का वह समय जो गुलामी के दौर में था। जहां पर दलित समुदाय व गरीब के बच्चे को समाज के लोग महत्व नहीं देते थे। उच्च वर्गों का सहयोग ना के बराबर होना। "उस समय के जो बड़े व्यक्तित्व के लोग थे। वह भी अन्य लोगों की बातों में आकर इन समाजों से दूरी बना कर रखा करते थे इन समाजों का बहिष्कार करते थे, किंतु बाबा साहब ने इस कुप्रथा का जमकर मुकाबला किया और अपने अंतिम सांस तक कुप्रथा को हटाने के लिए विरोधियों से लगे रहे। इन्होंने ऐसा अनमोल तोहफा भारत का संविधान बनाकर लोगों को प्रस्तुत किया। जिससे आज भारत का हर एक नागरिक गर्व से अपनी बातों को अपने कार्यों, कर्तव्यों को खुशी पूर्वक समाज के साथ, राज्य,देश के साथ साझा कर सकता है। उसके मार्ग में आज कुछ भी रुकावटे नहीं बन सकती। महिला, पुरुष, बालक, बालिका, युवा सभी को समान अधिकार, कर्तव्य 'बाबा साहब' का यह संविधान दे रहा है। आज महिलाएं आत्मनिर्भर हो रही है बड़े–बड़े क्षेत्र में नौकरी, व्यवसाय और राजनीतिक क्षेत्र से लेकर आर्थिक, सामाजिक अन्य क्षेत्रों में भी अपना योगदान निभा रही है। समाज का प्रत्येक वर्ग अपने रोजी–रोटी से लेकर अनेक कार्यों को बिना डरे, सहमे, कर रहे हैं। आज के समय में इन दलित समुदायों में और पिछड़े हुए व्यक्तियों, महिलाओं के साथ क्या इस प्रकार की अनैतिकता या कुप्रथा का प्रभाव कम हुआ है कि नहीं इसके बारे में लेख 'बीबीसी' समाचार द्वारा प्रस्तुत की गई है जिसमें बताया गया है कि आज भी यदि दलित समुदाय में आंदोलन हो रहे हो तो निश्चित है कि उनके अधिकार का अभी तक उन्हें हक प्राप्त नहीं हुआ है जो उनके साथ हजारों सालों तक हुआ करता आया था।

इस प्रकार से हमें अपने समुदाय में स्थित इन बुराइयों को समाप्त करने का फैसला लेना चाहिए।क्योंकि हम वही कार्य को प्रथम समझते हैं जो हमारे आसपास घटित होती है हमारे साथ के कोई भी वर्ग क्यों न हो, उन्हें समानता की एक ही तराजू में नापा जाना चाहिए। यही सन्देश 'उद्धारकर्ता मसीहा बाबा साहेब' सभी नागरिकों को देते है ।

निष्कर्ष :

1. https://www-bbc-com/hindi/india–38744348

– **बिकलेस कुमार गुप्ता**
असिस्टेंट प्रोफेसर
HOD पॉलिटिकल साइंस
गवर्नमेंट नवीन कॉलेज मैनपाट
जिला सरगुजा छत्तीसगढ़–8319120319
पोस्ट–भिटीकँला सुंदरपुर
जिला सरगुजा–497001 (छ.ग.)

संदर्भ :

1. मेरी आत्मकथा मेरी कहानी, मेरी जुबानी डॉ भीमराव अंबेडकर प्रभात पब्लिकेशन 2024
2. मैं भीमराव अंबेडकर बोल रहा हूं श्री दिनकर कुमार प्रभात पब्लिकेशन 2023
3. हमारा संविधान– सुभाष कश्यप
4. ब्राहमण कि बेटी– शरत चंद्र चट्टोपाध्याय प्रकाशन वर्ष 2024 प्रकाश बुक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली
5. भारतीय जाति व्यवस्था और बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर का चिंतन– बन्ना राम मीना आश्वस्त पत्रिका मार्च 2023
6. https://www-bbc-com/hindi/india-38744348
7. https://www-bbc-com/hindi/india-65264335
8. https://www-drishtiias-com/hindi/daily updates/daily-news-analysis/the-life-and-legacy-of-dr-bhim-rao-ambedkar
9. https://www-jagran-com/news/national-know-more-about-dr-br-ambedkar-on-his-birth-anniversary-17821989-html

2 अक्टूबर जन्मदिवस के अवसर पर शत-शत नमन

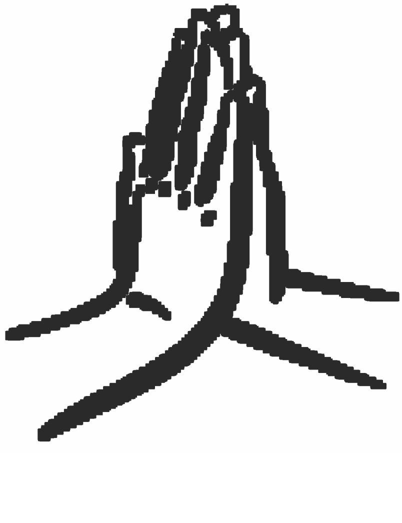

"साहब तेरी नेक कमाई, तूने सोती कौम जगाई।"

परिनिर्वाण दिवस पर सादर नमन

मा. कांशी राम

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक **पिंकी सत्यप्रेमी** ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से
मालवा ग्राफिक्स, 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं
20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार